प्रश्न: स्पष्ट करें कि मध्यकालीन भारतीय मंदिरों की मूर्तिकला उस दौर के सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। (150 शब्द, 10 अंक)

उत्तर: मध्यकालीन भारत में मंदिर मूर्तिकला अपने स्वरूप में विविधतामूलक थी, जो मध्यकाल के राजनीतिक सम्बन्धों के साथ-साथ सामाजिक सम्बन्धों की बेहतर अभिव्यक्ति है।

- वस्तुतः इस काल की मन्दिर मूर्तिकला का सामाजिक जीवन पर निम्नलिखित प्रभाव देखने को मिलता है-

Ques : How will you explain that Medieval Indian temple sculptures represent the social life of those days? (150 word, 10 marks)

Answer : During the mediaeval period, temple sculpture exhibited a diverse range of forms, reflecting both political and social relations.

- The influence of social life on temple sculpture of this period can be seen in the following ways:

1. इस काल की मंदिर मूर्तिकला पर 'सामंती संरचना' का प्रभाव दिखाई पड़ता है अर्थात् मंदिर में मुख्य देवता के बगल में गौण देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हुईं।
2. इस काल की मूर्तिकला में प्राचीनकाल से चले आ रहे आर्य एवं गैर-आर्य देवताओं के मध्य एक प्रकार का सम्मिश्रण देखने को मिलता है। उदाहरण-शिव, कार्तिकेय।
3. इस काल की मूर्तिकला पर 'भक्तिवाद का प्रभाव' देखा गया, जहाँ उत्तर भारत में विष्णु, शिव, राम का महत्व बढ़ा, वहीं दक्षिण भारत में भगवान के रूप में राजा की मूर्तियाँ स्थापित होने लगीं। उदाहरण- राजराजेश्वर मंदिर।

1. **The feudal structure had a noticeable influence on temple sculptures. One can observe the depiction of minor deities alongside the main deity within the temples.**
2. **A remarkable fusion between Aryan and non-Aryan deities, a tradition dating back to ancient times, is evident during this period. Noteworthy examples include the depictions of Shiva and Kartikeya.**
3. **The rise of Bhaktism significantly impacted the sculpture of the era. In North India, deities such as Vishnu, Shiva, and Rama gained greater prominence. Meanwhile, in South India, the idols of kings were worshipped as divine beings. The Rajarajeshwara Temple serves as a remarkable example of this trend.**

4. सबसे बढ़कर इस काल में देवताओं के साथ देवियों का भी महत्व बढ़ने लगा। जैसे-दुर्गा तथा शिव एवं पार्वती की मूर्तियाँ एक साथ।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मध्यकालीन मूर्तिकला पर तत्कालीन समाज का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है, जो विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों को उद्घाटित करती है।

4. Female deities were given importance in mediaeval sculpture along with male deities, exemplified by the paired depiction of Shiva with Durga and Parvati.

In conclusion, mediaeval sculpture bears testimony to the substantial impact of contemporary society, revealing diverse social relationships.

प्रश्न: भारतीय परंपरा और संस्कृति में गुप्त-काल और चोल-काल के योगदान पर चर्चा करें। (250 शब्द, 15 अंक)

उत्तर: भारतीय इतिहास में गुप्तकाल एवं चोलकाल सांस्कृतिक दृष्टि से महान काल माने जाते हैं, जहाँ गुप्तों ने 'नागर शैली' के रूप में एक क्लासिकल युग की शुरूआत की, तो चोलों ने दक्षिण में 'द्रविड़ शैली' के एक नये मानदण्ड को स्थापित किया।

Ques : Discuss the main contributions of Gupta period and Chola period to Indian heritage and culture. (150 word, 10 marks)

Answer: The Gupta period and the Chola period are widely regarded as culturally significant periods in Indian history. The Guptas exemplify a classical era in art, literature, and architecture, while the Cholas set a new standard in architecture, sculpture, and painting in the southern region.

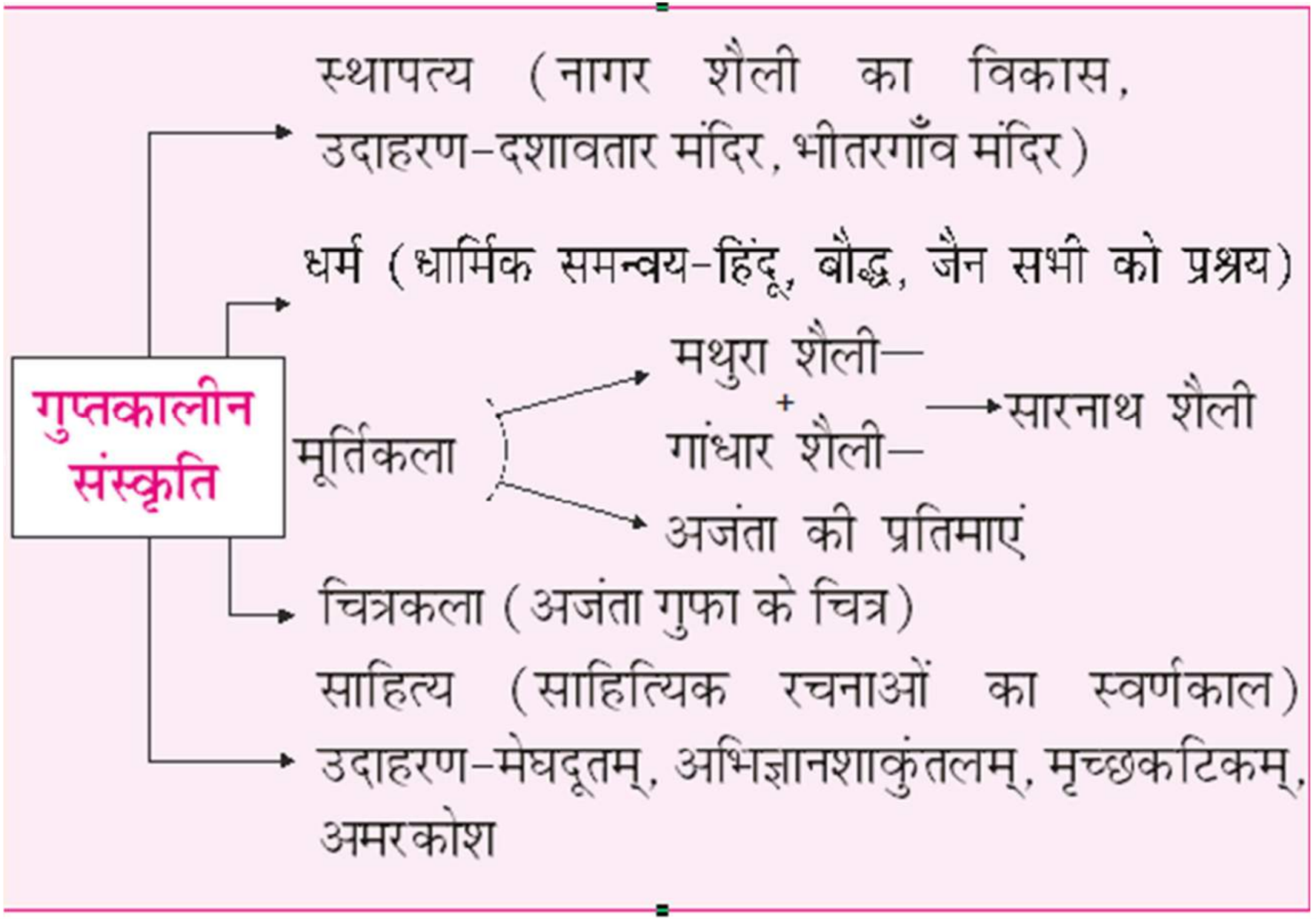
गुप्तकालीन संस्कृति
स्थापत्य (नागर शैली का विकास, उदाहरण–दशावतार मंदिर, भीतरगाँव मंदिर)
धर्म (धार्मिक समन्वय–हिंदू, बौद्ध, जैन सभी को प्रश्रय)
मूर्तिकला
मथुरा शैली–
गांधार शैली–
+
सारनाथ शैली
अजंता की प्रतिमाएं
चित्रकला (अजंता गुफा के चित्र)
साहित्य (साहित्यिक रचनाओं का स्वर्णकाल)
उदाहरण–मेघदूतम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्, मृच्छकटिकम्, अमरकोश

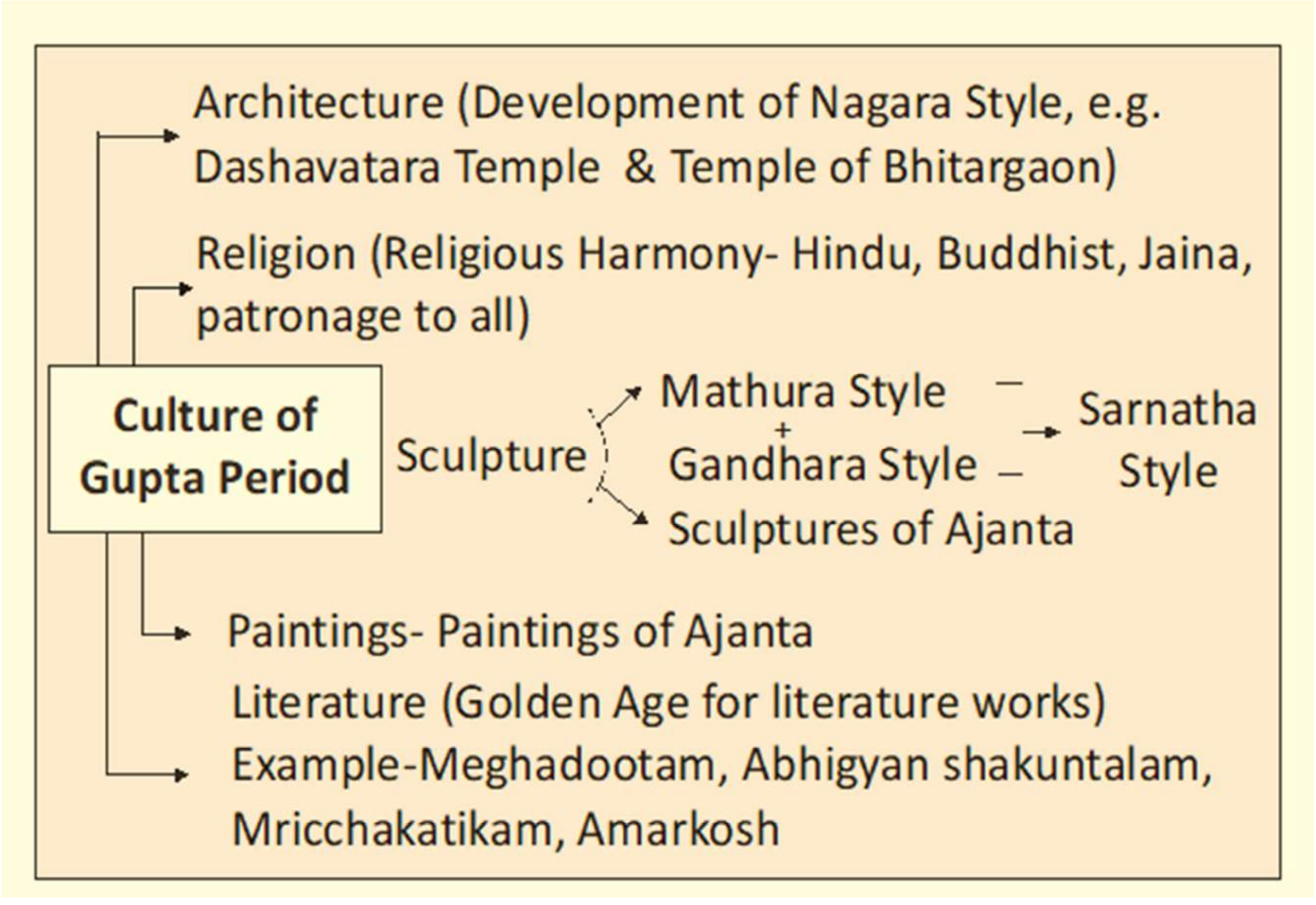
Culture of Gupta Period
Architecture (Development of Nagara Style, e.g. Dashavatara Temple & Temple of Bhitargaon)
Religion (Religious Harmony- Hindu, Buddhist, Jaina, patronage to all)
Sculpture
Mathura Style
Gandhara Style
Sarnatha Style
Sculptures of Ajanta
Paintings- Paintings of Ajanta
Literature (Golden Age for literature works)
Example-Meghadootam, Abhigyan shakuntalam, Mricchakatikam, Amarkosh

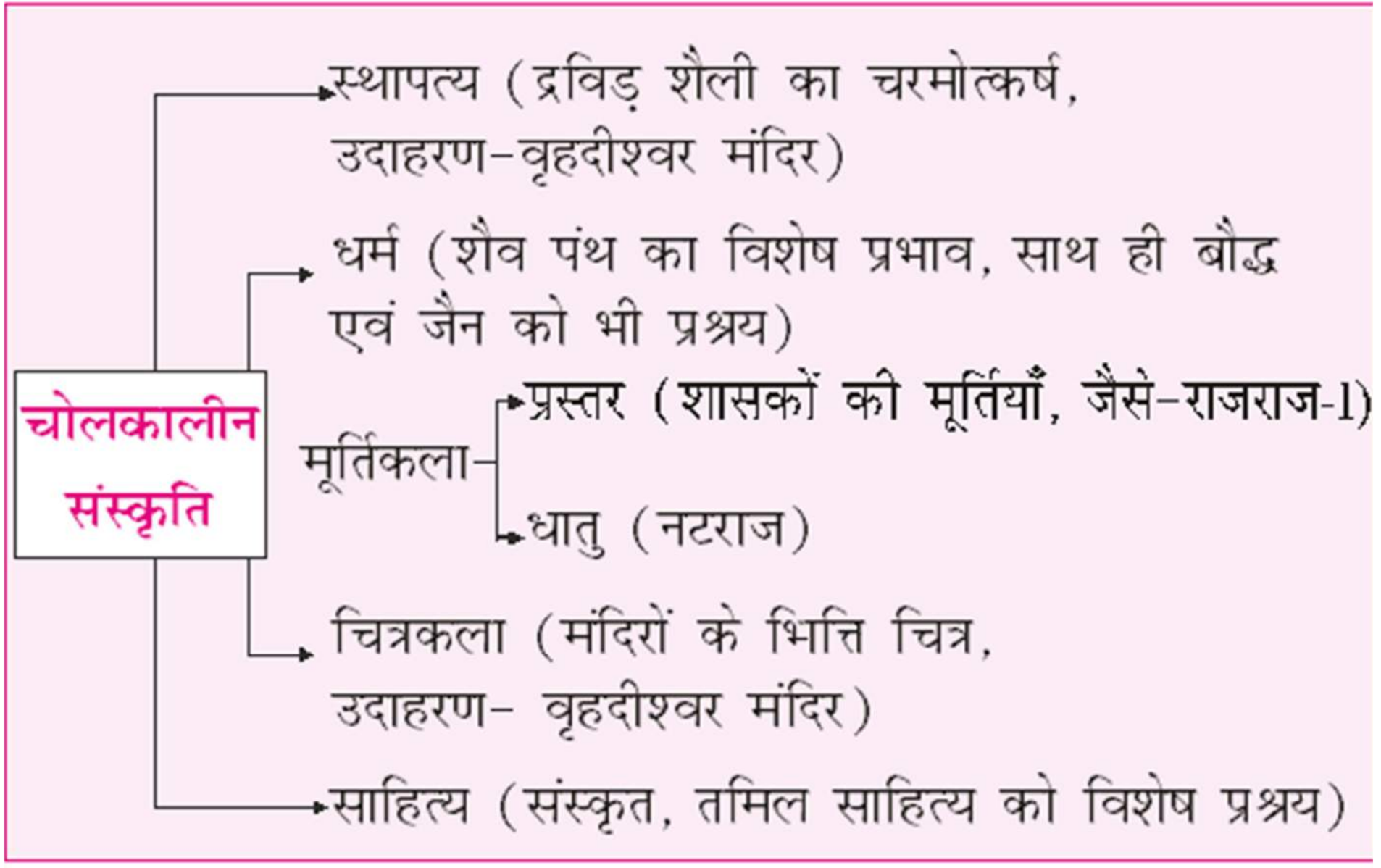
चोलकालीन संस्कृति
स्थापत्य (द्रविड़ शैली का चरमोत्कर्ष, उदाहरण–वृहदीश्वर मंदिर)
धर्म (शैव पंथ का विशेष प्रभाव, साथ ही बौद्ध एवं जैन को भी प्रश्रय)
मूर्तिकला
प्रस्तर (शासकों की मूर्तियाँ, जैसे–राजराज-I)
धातु (नटराज)
चित्रकला (मंदिरों के भित्ति चित्र, उदाहरण– वृहदीश्वर मंदिर)
साहित्य (संस्कृत, तमिल साहित्य को विशेष प्रश्रय)

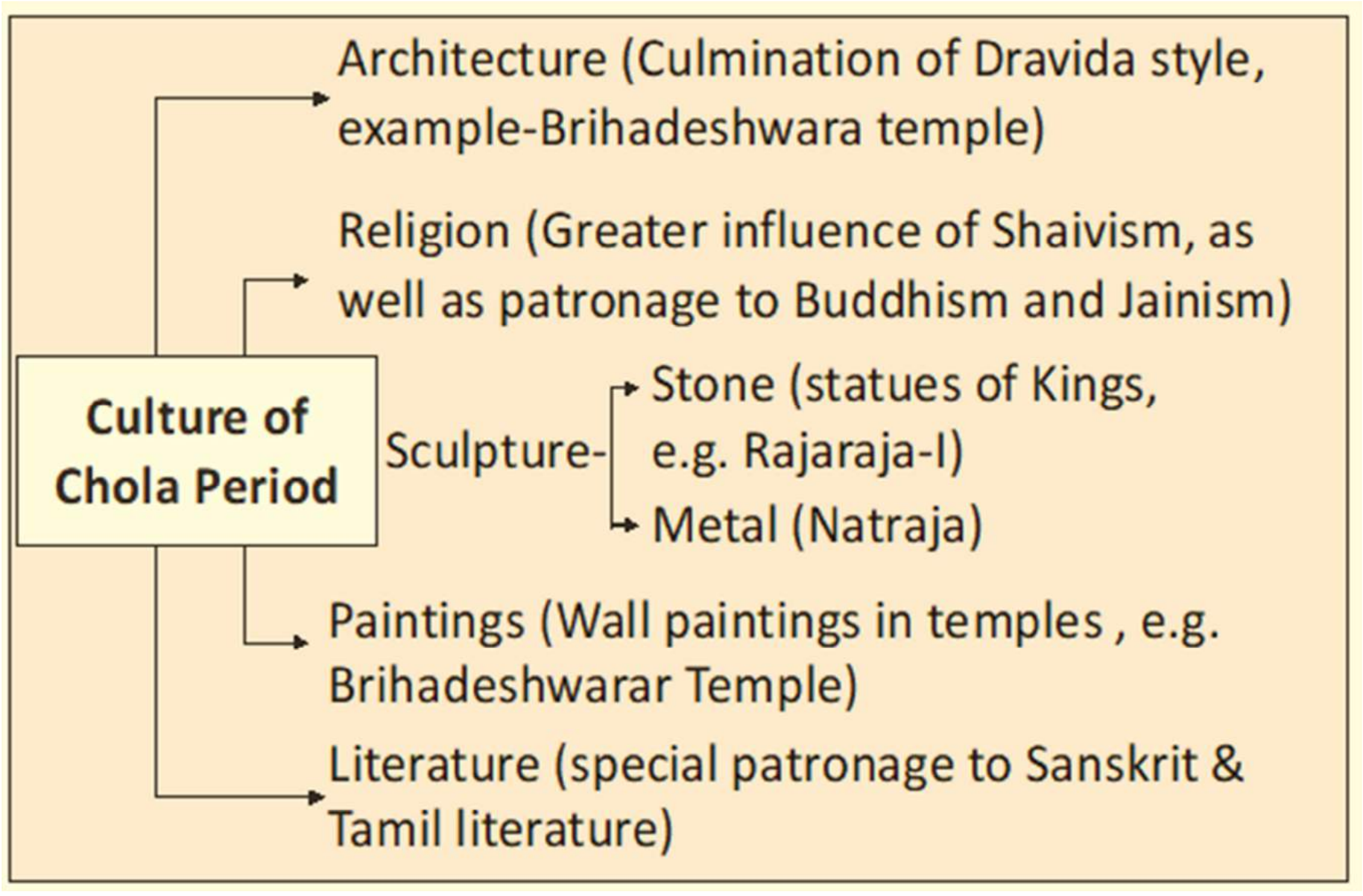
Culture of Chola Period
Architecture (Culmination of Dravida style, example-Brihadeshwara temple)
Religion (Greater influence of Shaivism, as well as patronage to Buddhism and Jainism)
Sculpture-
Stone (statues of Kings, e.g. Rajaraja-I)
Metal (Natraja)
Paintings (Wall paintings in temples , e.g. Brihadeshwarar Temple)
Literature (special patronage to Sanskrit & Tamil literature)

गुप्त काल के अन्तर्गत स्थापत्य कला

- नागर शैली, बेहतर मंदिर निर्माण, उदाहरण के लिए–देवगढ़ का दशावतार मंदिर, भूमरा का शिव मंदिर।

चोलों के अन्तर्गत स्थापत्य कला

- द्रविड़ शैली में भव्य मंदिर निर्माण, उदाहरण के लिए– राजराज प्रथम द्वारा निर्मित राजराजेश्वर मंदिर, गंगईकोण्डचोलपुरम मंदिर (दक्षिण के ये मंदिर अपने शिखर, विमान, मण्डप एवं विशाल गोपुरम के अनुपम उदाहरण हैं)

Architecture:

- **The Guptas pioneered the Nagara style of temple architecture, exemplified by structures like the Dashavatar temple of Deogarh and the Shiva temple of Bhumra. Meanwhile, the Cholas developed the Dravidian architectural style, characterised by shikharas, vimanas, mandapas, and grand gopurams. Remarkable examples include the Rajarajeswara Temple by Rajaraja I and the Gangaikonda Cholapuram Temple by Rajendra Chola.**

गुप्तकाल की मूर्तिकला

- इस काल में मूर्तिकला की दो प्रचलित शैलियाँ, मथुरा कला एवं गांधार कला इन दोनों के मिश्रण से सारनाथ शैली का विकास हुआ। इस शैली में बेहतरीन प्रकार की मूर्तियों का निर्माण हुआ। सारनाथ की विशिष्ट मूर्तियां इसी काल की हैं।
- अजंता की मूर्तियाँ भी इस काल के बेहतर उदाहरण हैं।

चोलकाल की मूर्तिकला

- इस काल में पत्थर के साथ-साथ धातु की मूर्तियां अधिक प्रचलित थीं। उदाहरण के लिए,
  - शिव की मूर्ति, नटराज की मूर्ति।

Sculpture:

- **The Guptas contributed to the development of the Mathura and Sarnath styles of sculpture. Notable among their works is the statue of Buddha from Sultanganj, exemplifying Gupta sculptural finesse. The Chola sculptures encompassed both stone and metal mediums, including the iconic idol of Shiva and Nataraja.**

गुप्तकालीन चित्रकला

- गुप्तकालीन चित्रकला भारत की अनोखी धरोहर है। उदाहरण उदाहरण के लिए, – अजन्ता में गफा संख्या (16) में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र।
- जातक कथाओं के चित्रांकन।

चोलकालीन चित्रकला

- चोलकाल की चित्रकला उनके मंदिर के प्रदक्षिणा पथ एवं भित्ति चित्र के रूप में प्रकट होती है। जिसमें भगवान शिव व पार्वती के साथ राजाओं के भी चित्र बनाये जाते थे।

Painting:

- **Gupta painting represents a distinctive heritage of India, with renowned masterpieces found in the Ajanta and Bagh caves from that period. Notably, the painting of a dying princess in cave number 16 at Ajanta vividly exemplifies the artistic brilliance of Gupta paintings. Chola paintings predominantly manifest as mural paintings adorning the circumambulation path of temples, often depicting kings alongside Lord Shiva and Parvati.**

गुप्तकालीन साहित्य

- गुप्त काल साहित्यिक रचनाओं का 'स्वर्णकाल' था। इस काल में कालिदास, अमर सिंह, शुद्रक (मृच्छकटिकम्) जैसे रचनाकारों ने अनेक रचनाएं की हैं। उदाहरण के लिए,–मेघदूतम, कुमार संभवम्।

चोलकालीन साहित्य

- चोलकाल 'तमिल साहित्य' का 'स्वर्ण युग' था जिसमें कंबन द्वारा तमिल रामायण की रचना प्रमुख है।

Literature:

- **The Gupta period is celebrated as the "Golden Age" of literary works, with illustrious authors such as Kalidas, Amar Singh, and Shudrak producing notable compositions. Works like Meghdootam, Kumar Sambhavam, Amarakosha, and Mrichchakatikam exemplify the literary achievements of this period. In contrast, the Chola period marked the "Golden Age" of Tamil Literature, with Kamban's Tamil Ramayana standing out as a prominent work.**

धर्म

- गुप्तकाल में जहाँ हिन्दू, बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म को पराश्रय दिया गया, वहीं चोलकाल में हिन्दू, वैष्णव, शैव आदि धर्मों को संरक्षण दिया गया।

उपर्युक्त आधार पर हम कह सकते हैं कि गुप्त एवं चोलों ने अपने काल में ऐसे क्लासिकल मानदण्ड स्थापित किए, जो वर्तमान भारत की महत्वपूर्ण विरासत के आधार बने हुये हैं।

Religion:

- **The Gupta rulers patronised Hinduism, Buddhism, and Jainism, while the Chola rulers actively promoted Vaishnavism, Shaivism, and other religious traditions.**

In summary, the Guptas and the Cholas left enduring legacies by setting classical standards in various artistic domains. These periods continue to hold significant importance in the cultural heritage of India.

प्रश्नः भारतीय मिथक, कला और वास्तुकला में सिंह एवं वृषभ की आकृतियों के महत्त्व पर विचार करें। (250 शब्द, 15 अंक)

उत्तरः प्राचीन काल से वर्तमान भारत की कलाकृतियों में देवता, मानव व पशु के जीवन का एक सम्मिश्रण देखने को मिलता है, जो मिथक होते हुए भी तत्कालीन समाज का दर्पण प्रस्तुत करते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में भारतीय कला पर सिंह (शेर) व वृषभ (बैल) का महत्व निम्नलिखित है-

सिंह का महत्व

- प्राचीन काल में सिंह (शेर) का सम्बन्ध महावीर स्वामी के जीवन में देखने को मिलता है, जो अपने आप पर विजय के प्रतीक व साहस के रूप में दिखाई पड़ता है।

Ques : Discuss the significance of the lion and bull figures in Indian mythology, art and architecture. (150 word, 10 marks)

Answer : Throughout ancient Indian art, the depiction of combined forms of gods, humans, and animals offers a glimpse of the society of that era. Specifically, the lion and bull hold significant importance and can be understood in the following ways:

Importance of the Lion:

- In ancient times, the lion became associated with Lord Mahavira, symbolising notions of victory and courage.

- आगे अशोक के काल में शेर राजा के साहस एवं विशाल साम्राज्य का प्रतीक माना जाने लगा जिसका उदाहरण हम सारनाथ स्तम्भ पर देखते हैं।
- इसी के साथ सिंह, दुर्गा के वाहन के रूप में शक्ति, सौम्यता एवं स्थिरता का प्रतीक माना जाने लगा, जो विभिन्न मूर्ति एवं चित्रकला में देखने को मिलता है।
- सिंह के इसी साहस, सौम्यता, विशालता एवं ताकत के प्रतीक के कारण इसे हमारे नव-निर्मित संसद भवन में स्थापित किया गया है।

- **During Ashoka's reign, the lion came to represent the king's authority, his courage and the vastness of his empire. The Sarnath pillar serves as a prime example of this symbolism.**
- **Additionally, the lion, serving as the divine vehicle of Durga, embodies strength, serenity, and stability. These characteristics are reflected in various sculptures and paintings.**
- **Acknowledging these qualities, a lion sculpture has been prominently placed in our newly constructed Parliament House.**

वृषभ का महत्व

- वृषभ अथवा बैल को प्राचीन काल में 'प्रजनन' एवं 'उर्वरता' का प्रतीक माना जाता था।
- हड़प्पा से प्राप्त कई मुहरों में 'कूबड़ वाले सांड' का अंकन तत्कालीन कृषि की प्रगति आदि को दर्शाता है।
- अशोक कालीन रामपुरवा स्तम्भ से प्राप्त बैल आकृति को बुद्ध के यौवन का प्रतीक माना जाता है।
- भक्ति के क्षेत्र में वृषभ को नंदी के रूप में भगवान शिव के वाहक के रूप में प्रतिबिम्बित किया गया है।

Importance of the Bull:

- In ancient times, the bull symbolises fertility and the power of reproduction.
- The depiction of the 'Humped bull' on Harappan seals signifies the advancement of agriculture during that period.
- The bull statue on the Ashokan Rampurva pillar is regarded as a representation of the youthful form of Buddha.
- In the context of bhakti, the bull assumes significance as Lord Shiva's vehicle, known as Nandi.

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रत्येक काल खण्ड में इन मिथकों का अर्थ भिन्न-भिन्न होते हुये भी ये मिथक हमें उस कालखण्ड की बेहतर जानकारी प्रदान करते हैं।

In conclusion, although these myths may hold varying meanings across different time periods, they provide valuable insights into the contemporary society of their respective eras.

प्रश्नः शैलकृत स्थापत्य प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास के ज्ञान के अति महत्त्वपूर्ण स्रोतों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। विवेचना कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

उत्तर: प्रारंभिक भारतीय कला और इतिहास के ज्ञान के कई महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं, जैसे- साहित्य, चित्रकला, सिक्का कला, मूर्तिकला आदि तथा इनमें से शैलकृत स्थापत्य कला एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

Ques : The rock-cut architecture represents one of the most important sources of our knowledge of early Indian art and history. Discuss. (150 word, 10 marks)

Answer : Early Indian art and history encompass various domains: literature, painting, numismatics, sculpture, and sculptural architecture.

शैलकृत स्थापत्य प्रारंभिक भारतीय कला व इतिहास के ज्ञान के स्त्रोत के रूप में-

- मौर्यकाल में गुफा स्थापत्य कला मुख्य रूप से श्रमणों एवं आजीवकों के आवास हेतु बनायी गयी थी। उदाहरण- बाराबर पहाड़ी पर निर्मित गुफाएँ (बिहार)।
- मौर्योत्तर काल में शैलकृत स्थापत्य कला में चैत्य व विहार प्रमुख हैं। उदाहरण - कार्ले का चैत्य, विहार (महाराष्ट्र)।

- **Maurya period:** Cave architecture in Barabar Hills, Gaya, Bihar, served as residences for ascetics and monks.
- **Post-Mauryan period:** Chaityas(prayer halls)and viharas (monasteries) emerged as prominent sculptural forms. Example: Karla Chaitya and Vihara in Maharashtra.
- Ajanta and Ellora caves showcase intricate frescoes, reflecting artistic prowess and knowledge representation through paintings.

- भित्ति चित्रों के माध्यम से उस समय की चित्रकला व ज्ञान कौशल का विवरण अजंता व ऐहोल की गुफाओं में देखा जा सकता है।
- धर्म व दर्शन का ज्ञान- एलोरा गुफाएँ – हिन्दू, बौद्ध, जैन धर्म।
- मूर्तिकला – अजंता, एलोरा, एलीफेंटा गुफाएँ।
- प्राकृतिक दृश्य व जीव-जंतुओं के भित्ति चित्र– बाघ गुफाएँ।
- प्राचीन भारतीय विज्ञान और तकनीक का प्रत्यक्ष उदाहरण जैसे कार्ले चैत्यों में रोशनी और हवा के प्रवेश हेतु 'अश्वनाल वातायन' का विधान।

- **Ellora caves depict religious and philosophical insights from Hindu, Buddhist, and Jain traditions.**
- **Sculpture artistry is evident in Ajanta, Ellora, and Elephanta caves.**
- **Bagh caves feature mural paintings portraying natural landscapes and wildlife.**
- **Karle caves demonstrate ancient Indian science and technology, such as the "horseshoe window" for light and ventilation.**

- शैलकृत मंदिर स्थल
  - ✓ कैलाश मंदिर, एलोरा
  - ✓ महाबलीपुरम् (विज्ञान, कला व संस्कृति के बेजोड़ नमूने)

अतः कहा जा सकता है कि शैलकृत स्थापत्य कला न केवल प्राचीन भारतीय कला, बल्कि सतत् तथा समावेशी विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

- **Prominent cave temple sites include Kailasa Temple in Ellora and Mahabalipuram, showcasing achievements in science, art, and culture.**

Sculptural architecture has played a pivotal role in ancient Indian art and contributed to its continuous and inclusive development.

प्रश्न: भारतीय दर्शन एवं परम्परा ने भारतीय स्मारकों की कल्पना और आकार देने एवं उनकी कला में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विवेचना कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

उत्तर: प्राचीन भारत में कला एवं स्थापत्य की समृद्ध पृष्ठभूमि रही है तथा इसकी पृष्ठभूमि को निर्मित करने में सौंदर्य अभिरूचि के साथ-साथ धर्म, दर्शन, परम्परा एवं सामाजिक मूल्यों का भी अहम योगदान रहा है।

Ques : Indian Philosophy and tradition played a significant role in conceiving and shaping the monuments and their art in India. Discuss. (150 word, 10 marks)

Answer : Ancient India witnessed a thriving artistic and architectural milieu, characterized by a deep reverence for aesthetics and guided by the principles of religion, philosophy, tradition, and social values. The diverse art forms, including sculpture, architecture, and painting, should not be viewed in isolation but rather as interconnected expressions.

- कला के विभिन्न रूपों के विकास: यथा- स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि को पृथक-पृथक नहीं देखा जा सकता, अपितु समग्र रूप में देखने की जरूरत है।
- छठी शताब्दी ई.पू. में बौद्ध धर्म के उदय के साथ ही धार्मिक विषयों पर आधारित कला का विकास हुआ। मूर्तिकला भारतीय बौद्धों और हिंदुओं के बीच एक आम बात थी। हिंदू धर्म सदियों से भारतीय कला का एक मुख्य केंद्र बना रहा।

- **During the 6th century BCE, with the advent of Buddhism, artistic endeavors inspired by religious themes flourished. Sculpture became a common thread that connected Indian Buddhists and Hindus, with Hinduism emerging as a prominent hub of artistic creativity in India over the centuries.**
- **From the northern to the southern regions of India, the architectural and sculptural wonders associated with ancient traditions bear the influence of Vedic and Upanishadic philosophies.**

- उत्तर से दक्षिण भारत तक सनातन परंपरा से संबंधित स्थापत्य, मंदिर, मूर्तियों जैसे स्मारक वैदिक और उपनिषद् दर्शन तथा परंपरा से प्रभावित हैं। यह वैष्णव, शैव, शाक्त, देवी आदि आध्यात्मिक परंपराओं के रूप में प्रस्तुत होते हैं। सनातन परंपरा मंदिरों को अनेक प्रतीकों का समन्वय मानती है। उसके लिए मनुष्य पहले विकसित प्राणी है और मंदिर उसी का प्रतिरूप है।

- **These artistic creations embody various spiritual traditions such as Vaishnavism, Shaivism, Shaktism, and the worship of goddesses, deeply ingrained in the cultural thread. Temples, according to ancient traditions, symbolize a harmonious amalgamation of multiple motifs and serve as reflections of the human and divine existence.**

- दक्षिण भारत के स्मारकों का स्थापत्य वहाँ के राजाओं के स्थायित्व और उनके विचारों का प्रतीक है। मदुरई, मामल्लपुरम, चोलमंडलम के मंदिरों की विशालता उनका निर्माण करने वाले शासकों के वैचारिक और दैवीय स्वरूप को प्रदर्शित करने की कोशिश है।

- In southern India, the magnificent architecture of monuments stands as a testament to the stability of rulers and manifests their ideologies. The splendor observed in temples like those in Madurai, Mamallapuram, and the Chola region aims to depict the intellectual and spiritual essence of the patrons who commissioned their construction.

- जैन दर्शन के स्मारक भी अपने तीर्थंकरों के जीवन दर्शन से प्रभावित रहे हैं। हालाँकि जैन स्मारक अपने स्वरूप में सनातन और बौद्ध स्मारकों से प्रभावित रहे हैं। दिलवाड़ा का जैन मंदिर और ओडिसा की उदयगिरि और खंडगिरी गुफाएँ इसी दार्शनिक विस्तार की देन हैं।

- **Jain monuments, too, bear the imprint of the life philosophies of revered Tirthankaras. However, Jain monuments exhibit influences from both ancient and Buddhist traditions. Noteworthy examples include the Jain temple in Dilwara and the Udayagiri and Khandagiri caves in Odisha, which contribute to the philosophical expansion within this context.**

- वास्तव में भारतीय दर्शन एवं परम्परा और कला से प्रभावित भारतीय स्मारकों के मूल आधार शुद्ध भारतीय हैं, जिन्हें हिंदू, जैन या बौद्ध स्थापत्य कहकर विभाजित नहीं किया जा सकता है।

- **In essence, the roots of Indian monuments lie in Indian philosophy and tradition, transcending the limitations of exclusive categorizations as Hindu, Jain, or Buddhist architecture.**

END

Thank You!